पुनारुत्थान प्राप्त देह

अनन्तकाल में अंतार्दष्टि

<u>घर की ओर</u>

अपने घर वापस आने में कुछ खास बात होती है। जब हम घर से कुछ समय के लिए दूर होते हैं चाहे छुट्टियों के कारण, काम से या फिर और किसी वजह से और फिर लौटकर घर आते हैं एक जाने–पहचाने माहौल में तो हम सब एक सुकून अनुभव करते हैं। वहाँ वही जानी–पहचानी आवाज़ें, महक और तसवीरें होती हैं। यह बहुत ही आरामदायक अनुभव होता है, घर में होने का अनुभव। कुछ संबंधों के विषय में हम यहाँ तक कहते हैं कि हम किसी व्यक्ति के साथ 'बहुत सहज' महसूस करते हैं। हमारे कहने का अर्थ यह है कि उस व्यक्ति के साथ हम बहुत सहज और स्वतन्त्र महसूस करते हैं जैसे तब जब अपने घर पर होते हैं। जैसे मैं यह लिख रहा हूँ, यह बात मेरे ध्यान में आती है कि आज पूरे विश्व भर में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें उनके घरों से जाने को मजबूर किया गया है, कुछ मामलों में परिवारों को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया है और वह सब छोड़ने के लिए जो उनको बहुत प्रिय है। प्रत्येक जन के पास एक विश्राम का स्थान होना चाहिए, ऐसा स्थान जिसे घर कहा सके। इस पृथ्वी को छोड़ने से पहले यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि वह हमारे लिए ऐसा स्थान तैयार करने को गया है। एक स्थान जहाँ हम उसके साथ रहेंगे, एक ऐसा घर जिसके जैसा और कोई घर नहीं। जिस घर को हमने इस जीवन में जाना है, चाहे वह कितना सादा य कितना आलीशान क्यों न हो वह उसकी तुलना में कम ही होगा जो उसने उनके लिया तैयार किया है जो उसके हैं।

जब में एक किशोर था तो ऐवालॉन नाम के पानी के जहाज़ पर बर्तन धोने का काम करता था। जहाज़ इंग्लैंड से नॉर्थ अफ्रीका जाया करता था, मोरक्को में टैनगीयरस और कासाब्लैंका में रुकते हुए और साथ ही जिब्रालटर और स्पेन में ठहरते हुए। तापमान ९० से ऊपर होता था और जहाज़ वातनुकूलित नहीं था और हम बहुत देर तक काम करते थे। सबसे बेकार बात यह थी कि मैं रसोईघर में काम कर रहा था जहाँ जहाज़ की छत से कहीं ज़्यादा गर्मी थी। अत्याधिक पसीना बहने के कारण हमें प्रतिदिन नमक की गोलियाँ लेनी पड़ती थीं। मैं बहुत देर तक मेहनत से काम करता था जिसके बाद बहुत देर तक खूब बढ़िया पार्टी होती थी। (इस समय में मैं मसीह में विश्वास नहीं करता था।) यात्रा केवल दो सप्ताह की रही लेकिन कठिन काम की वजह से यह बहुत लंबी लगी। मुझे याद है कि जब जहाज़ वाईट क्लिफ़ ऑफ़ डोवर, इंग्लैण्ड से गुज़रा तो मैं रो रहा था; घर केवल एक घंटे की दूरी पर था। यह एक खास क्षण था। उस यात्रा पर घर से दूर मेरा समय इतना कठिन था कि मैंने प्रण किया कि मैं फिर से यात्रा नहीं करूँगा। (ज़ाहिर है, मैंने उस व्यक्तिगत प्रण का पालन नहीं किया।)

१) घर वापस लौट कर आने की आपकी सबसे पसंदीदा कहानी क्या है? जो समय आपके ध्यान में है उसका वर्णन करें, वह क्या बात थी जिसकी वजह से घर वापस लौट कर आने का अनुभव आपके लिए बहतरीन रहा?

यह कहानी पुराने मिशनरी जोड़े 'मॉरिसन्स' की है जो अफ्रीका में मिशनरी के तौर पर मसीह की सेवा करने के बाद अंतत अमरीका लौट रहे थे। उसी जहाज़ पर टेड्डी रूसवेल्ट जो उस समय अमरीकी राष्ट्रपती थे,

एक अफ़्रीकी सफ़र से लौट रहे थे। जब उनका जहाज़ तट पर आया तब न्युयॉर्क में बैन्ड–बाजा बज रहा था और प्रदर्शन हो रहा था, लोग टेडी का स्वागत करने के लिए बंदरगाह पर इकत्रित थे। जनता और पत्रकार टेडी को एक झलक देखेने के लिए उमड़ पड़े थे। मॉरिसन्स निराश थे क्योंकि उन्होंने उस दिन बंदरगाह से निकलते हुए उनेके पास बहुत कम पैसे थे जिससे वह केवल एक बहुत छोटा/मामूली घर ले सकते थे। जो स्वागत टेडी रूसवेल्ट को मिला था उसको देखकर हेनरी काफ़ी दुखी थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, कुछ तो गड़बड़ है क्योंकि हमने अपने जीवन के ४० साल मसीही सेवा कार्य में लगा दिए लेकिन किसी ने भी परवाह नहीं की कि बंदरगाह पर आकर हमारा स्वागत करें और हमें घर वापस ले जाएँ। उनकी बुद्धीमान पत्नी ने उन्हें इस विषय में परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा। कुछ समय बाद वह अपने चेहरे पर रौशन मुस्कुराहट लेकर लौटे, प्रभु ने उन्हें स्मरण दिलाया था – "हेनरी, अभी भी तुम घर नहीं पहुँचे।"

यदी आप कभी भी इस जीवन से थक जाएँ तो आप अपने आप को याद दिलाएँ "तुम अभी तक घर नहीं पहुँचे।" इसी तरह यदी आप एक सरल जीवन शैली के कारण बेपरवाह हो जाँए और अपने संसाधन और प्रयास इस जीवन के अराम उठाने में लगा दें तो इस बारे में सोचें: जीवन में केवल यही नहीं है। यह आपका अनन्त घर नहीं है। यह जीवन बस थोड़े समय के लिए है। यदि आपने मसीह पे भरोसा रखा है तो वह समय आएगा जब प्रभु हमें लेने आएगा और हम उस डेरे सरीखे घर को गिराएँगें (२ कुरिन्थियों ५:१–४) चाहे इस शरीर से अलग होने पर (मृत्यु) या फिर तब जब हमारा स्वामी और प्रभु अपनी प्रतिज्ञया के अनुसार हमें लेने आएगा।

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। 2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। 3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। **(यहुन्ना १४:१–३)**

अपने पिछले अध्ययन में हमने बात की थी कि प्रभु अपनी कलीसिया को लेने आएगा, उन्हें जो फिर से आत्मा से जन्में हैं। हमने बात की उस प्रतिफल और सेवा के बारे में जो वह चरित्र, विशवास–योज्ञता और सेवा के लिए देगा। हम इस अध्ययन में पुनरुत्थान पाई देह के बारे में देखेंगे जो मसीह के आने पर विश्वासियों को दी जाएगी। प्रभु अपनों को पहिचानता है (२ तिमोथियुस २:१९) और मसीह के आने पर वह अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और उन्हें इकट्ठा करेगा जिन्होंने उसके उद्धार का मुफ़्त वरदान ग्रहण किया है।

31 और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे। **(मत्ती २४:३१)**

यहाँ पर मैं कुछ बाईबिल शिक्षकों से मेल नहीं रखता जो यह सिखाते हैं कि मसीह के दो आगमन हैं – एक महासंकट से पहले और एक उसके बाद। यह मेरा विशवास है कि मसीह की एक ही 'दूसरी आमद' होगी। वचन में कहीं भी हमें मसीह की दो आमदों के विषय में नहीं बताया गया है। मसीह के आने पर कलीसिया उसके साथ बादलों में उठा ली जाएगी।

13 हे भाइयों, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की
नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। 14 क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो
वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। 15 क्योंकि हम प्रभु के वचन के
अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हूओं से कभी
आगे न बढ़ेंगे। 16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द
सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। 17 तब हम
जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति
से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३–१७)

ऊपर दिया गया भाग कलीसिया के (रेपचर) बादलों पर उठाए जाने के बारे में बहुत महत्वपूर्ण भाग है। इन अध्ययनों में हमने पहले ज़िक्र किया है कि बाईबिल में रेपचर शब्द नहीं पाया जाता है। हमें अंग्रेज़ी शब्द "रेपचर" लातीन के रेपेर शब्द से मिला है जो कि युनानी शब्द हारपाज़ो का अनुवाद है। इसका शब्दिक अर्थ है "छीन लिया जाना"। ऊपर दिए गए भाग में इसका अंग्रेज़ी अनुवाद "उठा लिए जायेंगें" दिया गया है। (पद १७) इस घटना से पहले स्वयं प्रभु यीशु के द्वारा तेज़ ध्वनी की जाएगी। मैं यह सोचता हूँ कि तेज़ पुकार में उसके होंठों से क्या शब्द निकलेंगे। ध्यान दें कि तेज़ तुरही का शब्द भी होगा। जो मसीह में सो गए हैं, वे उस आमद में मसीह के साथ लाए जाएँगें (पद १४) और अपनी देह से मिलकर एकदम बदल जाएँगें। जो उस समय तक जीवित रहेंगे वे संसार भर के विश्वासियों के साथ ऊपर लिए जाने से पहले यह सब होते हुए देखेंगें।

हमारे आत्मा के स्वर्ग चले जाने के बाद एक नई देह पाने का क्या महत्व या उद्देश्य है?

देह का पनरुत्थान

मैं यह बताना चाहता हूँ कि जिस घटना को हम कलीसिया का (रेपचर) उठाया जाना कहते हैं, वचन के दूसरे भाग में उसी घटना को पुनरुत्थान कहते हैं। कलीसिया के रेपचर पर हमारी देह एकदम से बदल जाएगी उस प्रकार से जैसे यीशु की देह बदल गई थी जब वह मृतकों में से जिलाया गया। पौलूस कुरिन्थुस की कलीसिया को इसी घटना के बारे में जब मृतक जिलाए जाएंगें लिखता है।

५० हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते,
और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। ५१ देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि
हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। ५२ और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली
तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम
बदल जाएंगे। (१ कुरिन्थियों १५:५०–५२)

ध्यान दें, इसी घटना से पहले तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे जिलाए जाएँगें। मुर्दे दो बार नहीं जिलाए जाएँगे। उठा लिया जाना और पुनरुत्थान होना दोनों एक ही हैं और समान बात है। हमारी सांसारिक देह, यह पापमय शरीर जो हम इस दुनिया में धारण किए हुए हैं एकदम बदल जाएगी। यह बदलाव 'एक क्षण' में होगा (पद ५२)
हमें अंग्रेज़ी का ऐटोम (परमाणु) शब्द युनानी शब्द 'ऐटोमो' से मिलता है। यह एक सेकेण्ड के परमाणु कण की व्याख्या करता है। हम एक क्षण में बदल जाएँगे। दो बार बदल जाएँगे शब्द का प्रयोग हुआ है और वह भी केवल वचन के इसी भाग में। इसके लिए युनानी शब्द एलाजसोमेथा है जिसका अर्थ है बदलना, परिवर्तित होना, रूपान्तरित होना। प्रेरित पौलूस इस घटना को बीज के बारे में बताते हुए समझाते हैं। आईए हम इस भाग में वापस जाएँ और समझने का प्रयास करें हम मसीही जन होने के नाते किस प्रकार से महिमामय देह पाते हैं।

35 अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं? 36 हे निर्बुद्धि, जो कुछ तु बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। 37 ओर जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। 38 परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह। 39 सब शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का शरीर और है; पक्षियों का शरीर और है; मछिलयों का शरीर और है। 40 स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, और पार्थिव का और। 41 सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)। 42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। 1 कुरिन्थियों 15:35-42

पौलूस बीज का उदाहरण देता है। वह कहता है कि बीज और उसमें से निकलनेवाले पौधे में बहुत अंतर है। वह कह रहा है कि हमारी शारीरिक देह एक बीज है जो शरीर के मरने पर बोई जाती है और जब इस पापी युग का अन्त हो जाएगा और देह का पुनरुत्थान होगा तब यह बिलकुल बदल जाएगी। पुनरुत्थान प्राप्त देह के विषय में बात करने से पहले हम देखेंगे कि यह बदलाव कैसे होता है?

हमारे हृदयों में परमेश्वर का बोया गया जीवन

जब कोई व्यक्ति अपना जीवन मसीह को देता है तो उसके भीतर कुछ होता है। वह आत्मा के द्वारा पुनर्जन्म या नया जन्म पाता है।

यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। (यूहन्ना 3:3)

प्रेरित पतरस लिखते हैं, (१ पतरस १:३) उस क्षण से हमारे अन्दर एक आत्मिक बीज बढ़ने लगता है जो धीरे– धीरे परमेश्वर के वचन, हमारी परीक्षाओं और जीवन के अनुभवों द्वारा हमें मसीह के स्वरूप में बदलता जाता है।

क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। (1 पतरस 1:23)

10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। **(यहुन्ना १०:१०)**

इस जीविते बीज की विशेषता यह है कि यह आत्मिक जीवन है जो कि बहुतायत का है, अनन्त है और नष्ट न होनेवाला है। "जीवन" के लिए जो युनानी शब्द का इस्तेमाल किया गया है वह ज़ोई है, इसका अर्थ है ’जीवन जीना’। इस शब्द के विषय में मेरी की वर्ड स्टडी बाईबिल कहती है:

" यह एक तरह का आध्यात्मिक शब्द है जो जीवन को चलानेवाली ताकत को दर्शाता है, वह ज़रूरी सिद्धान्त जो जीवित प्राणियों को जीवन्त करता है। ज़ोई का अधिकांश प्रयोग आत्मिक जीवन के सन्दर्भ में किया जाता है। यह जीवन स्वयं परमेश्वर का जीवन है जिसके सहभागी विश्वासी जन बनाए जाते हैं।"[१]

मैं नहीं समझ सकता कि शब्द बीज कैसे हो सकते हैं लेकिन मैं शब्दों की सामर्थ पर सन्देह नहीं करता। परमेश्वर ने अपने वचन कहे और संसार की रचना हुई। उत्पत्ति के संपूर्ण पहले अध्याय में परमेश्वर के वचनों के द्वारा सृष्टि की गई। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो" और उजियाला हो गया। (उत्पत्ति १:३) ध्यान दीजिए कितनी बार यह शब्द "परमेश्वर ने कहा" लिखे हैं। परमेश्वर के बोले गए शब्दों में बहुत सामर्थ है।

१ कुरिन्थियों १५ का जो भाग हमने देखा उसमें पौलूस कहता है कि वह परमेश्वर ही है जो यह निर्धारित करता है कि बीज बड़ा होकर कौन सी देह धारण करेगा। (पद ३८) वह कहता है कि पृथ्वी ग्रह पर विभिन्न प्रकार के भैतिक शरीर हैं जैसे मानव, पशु, पक्षी और मछली। पृथ्वी पर उत्पन्न हुए सारे भौतिक प्राणी बीज से ही आते हैं। बीज के बारे में बात करते हुए पौलूस दो विभिन्न उदाहरण देता हुआ दिखाई देता है:

हमारी पुनरुत्थान प्राप्त देह किसी प्रकार से उस रूप में पहचानी जाएगी जैसे हम हैं। वह कहता है, "जब तुम बोते हो, तो पौधे को नहीं बलिक बीज ही बोते हो शायद गेहूँ का या किसी और चीज़ का।" (पद ३७) बीज के अन्दर ही शारीरिक देह का डी.एन.ए होता है। सेब के बीज से संतरे नहीं लगते। एक बीज और जो देह वह बीज धारण करेगा उनके बीच में जीवन की निरन्तरता बनी रहती है।
हमारी स्वर्गीय जिलाई गई देह कुछ–कुछ हमारी सांसारिक शारीरिक देह के बीज जैसी होगी। हम अपनी जिलाई गई देह में एक–दूसरे को पहचानेंगे।

[1] Key Word Study Bible, AMG Publishers, Page 1630.

2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। (**१ यहुन्ना ३:२**)

और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय मनुष्य का रूप भी धारण करेंगे॥ (१ कुरिन्थियों १५:४९)

१८ परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥ (२ कुरिन्थियों ३:१८)

पौलूस कहता है इस क्षण में प्रत्येक विश्वासी में जो बदलाव होगा उनके बीच महिमा में बहुत अन्तर होगा। यही बात यीशु ने बताई जब उसने कहा, "उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे; जिस के कान हों वह सुन ले॥ (**मत्ती १३:४३**)" हमारी शारीरिक देह परमेश्वर के द्वारा रची गयी है शारीरिक जगत में रहने के लिए लेकिन इस देह को छुड़ाया जाना है और उस आत्मिक और शारीरिक देह में बदलना है जिसे परमेश्वर ने हमारे धारण करने के लिए योजना से रचा है। प्रेरित पौलूस ने भी यह बताया:

हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। (१ कुरिन्थियों १५:५०)

जो जीवन हमें आदम से मिला है वह हमारे लिए काफ़ी नहीं है कि हम स्वर्गीय राज में प्रवेश कर सकें बिना उस जीवन के जो हमें मसीह से मिला है जो कि परमेश्वर का वरदान है। मैं विश्वास करता हूँ कि छुड़ाई गई मानवता के लिए, जीवित परमेश्वर की कलीसिया के लिए परमेश्वर का यह उद्देश्य है कि संत (भक्त जन) आत्मिक और भौतिक राज्य में रह सकें जिस प्रकार अपने पुनर्जीवित होने के ४० दिन में यीशु ने किया। यीशु मसीह ने अपनी देह पृथ्वी पर कहीं छोड़ी नहीं है। वह शारीरिक लेकिन फिर भी आत्मिक पुनर्जीवित देह के साथ स्वर्ग में रहता है। क्या यह परमेश्वर के जन होने के विषय में सही नहीं है? परमेश्वर को उसका साथ इतना भाया कि उसने शारीरिक देह के साथ ही उसको स्वर्ग में उठा लिया।

और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। (**उत्पत्ति ५:२४**)

एलिय्याह के विषय में भी यही बताया जाता है। वह भी अपनी शारीरिक देह के साथ स्वर्ग में उठा लिया गया। (२ राजा २:११)कुछ लोग कहते हैं कि हनोक और एलिय्याह वे दो गवाह हैं जो दुनिया के पापों के लिए साक्षी देंगे जिसका वर्णन प्राकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। (प्राकशितवाक्य ११:३)

इन दो व्यक्तियों ने अभी भी मृत्यु को अनुभव नहीं किया है (इब्रानियों ९:२७) तो यह संभव है कि वे परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही देने के लिए स्वर्ग से उतर आएँ और फ़िर घात किए जाँए। और हाँ साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर उन्हें फिर जिलाएगा, मसीहविरोधी के अनुयायियों के क्रोध को बढ़ाते हुए। (प्राकशितवक्य ११:११)
जो शारीरिक बीज बोया गया है केवल उसी की मृत्यु पर आत्मिक जीवन आता है। प्रभु यीशु मसीह वह स्वर्गीय आत्मिक जीवन बीज था। जिसने एक बीज के समान हमारे लिए अपना प्राण दिया:

२३ इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो। २४ मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। २५ जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करेगा। **(यहुन्ना १२:२३–२५)**

आइए हम देखें कि अपनी पहली कुरिन्थियों की पत्री में प्रेरित पौलूस इस संदर्भ में क्या सिखाते हैं: पुनर्जीवित देह के विषय में हमारे मुख्य भाग (१ कुरिन्थियों १५:३५–५७) में पौलूस पहला मनुष्य, आदम के बारे में बात करते हैं जो हम सब को अपने स्वरूप में धारण करने के लिए एक जीवित बीज ठहरा। वह फिर कहते हैं कि अन्तिम/आखिरी आदम (मसीह) जीवन्दायक आत्मा बना। (पद ४५) पौलूस ने पहले ही कहा कि जो आदम को हुआ वह हम सबको हुआ है। आदम हम सबका प्रतिनिधि था क्योंकि वह मानव जाति का संघिय मुखिया था। शायद यह आपको ठीक न लगे कि उसकी सारी संतान को उसका पापी स्वभाव विरासत में मिले। उस बीज का जीवन आदम का पापी स्वभाव हम सबको दे दिया गया। लेकिन मसीह स्वयं संघिय मुखिया बनकर आया उन सबके लिए जो उसकी पूर्ण क्षमा को प्राप्त करेंगे। इस रीति से परमेश्वर दूसरे बीज के द्वारा अपने अलौकिक जीवन को लाता है, वह जो सिद्ध और पाप से मुक्त है। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाँएगे। (१ कुरिन्थियों १५:२२) जैसे आदम ने हमें शरीर के साथ पापी स्वभाव भी दिया, मसीह भी हमें नए जीवन का बीज देता है जो हमारे हृदयों में बोया गया है। वह हमें जीवन देने आया।

42 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। 43 वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। 44 स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है: जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। 45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। 46 परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ। 47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। 48 जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी

स्वर्गीय हैं। 49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥ (१ कुरिन्थियों १५:४२–४९)

३) इस भाग में से कौन से शब्द या वाक्य आपका ध्यान आकर्षित करते हैं? यह नई देह कैसी होगी, इस बारे में अपने विचार एक–दूसरे से व्यक्त करें।

जो देह भूमी में बोयी जाती है वह जिलाई गई देह से बिलकुल अलग होती है। हमारी पुनजीवित देह अविनाशी रूप में जिलाई जाएगी जिसका अर्थ है कि यह नाश नहीं हो सकती। यह न तो सड़ेगी, न बूढ़ी होगी और न ही बीमारी से ग्रसित होगी। जैसे हमने अपने पूर्वज, आदम से भौतिक राज्य में जीवन पाया है उसी प्रकार मसीही लोग आखिरी आदम से आत्मिक जीवन पाते हैं। मसीह को अन्तिम आदम कहा जाता है ताकि हम किसी और की आशा न लगाँए। जैसे हमने आदम की समानता को पहन लिया है, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वैसे ही मसीह की महिमा के स्वरूप को भी पहन लेंगे।

50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो
सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। 51 देखो, मैं तुम से भेद की बात
कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। 52 और यह क्षण भर में, पलक
मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में
उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को
पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। 54 और जब यह नाशमान अविनाश को
पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, **तब** वह वचन जो लिखा है, पूरा हो
जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। 55 हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? 56 हे मृत्यु तेरा
डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। 57 परन्तु परमेश्वर का
धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (१ कुरिन्थियों १५:५०–५७)

हम बदल जाएँगे

वह जो अन्दर है वह किसी दिन प्रकट हो जाएगा। वह हमारे पुराने स्वभाव जैसा नहीं रहेगा। पौलूस कहता है कि माँस और लहू परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हो सकते। (पद ५०) यह अब नाशवान नहीं बल्कि आविनाशी होंगे (पद ५३) हम सब नहीं सोँएगें (सब विश्वासी अपनी देह से अलग नहीं होंगे) कुछ ऐसे होंगे जो मृत्यु से गुज़रे बिना क्षण भर में ही बदल जाएँगे। जब मसीह आएगा तो क्षण भर में, पलक झपकते ही हम बदल जाएँगे नाशवान देह से अविनाशी देह में। (पद ५१–५२)

20 पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने ही
बाट जोह रहे हैं। 21 वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिस के द्वारा वह सब

वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा॥ (फिलिप्पियों ३:२०–२१)

'बदल जाना' से लिए युनानी शब्द मेटास्कीमटीज़ो है। यह दो युनानी शब्दों से मिलकर बना है। मेटा का अर्थ है एक स्थान या दशा का बदलना और स्कीमा का अर्थ है आकार या बाहरी रूप। बदलने के लिए किसी चीज़ का बाहय रूप बदल देना, फिर से तैयार करना, दोबारा आकारित करना।[2]

आप क्या समझते हैं कि अविनाशी और अमर देह होने का क्या तात्पर्य है? (१ को० १५:४२)आप क्या सोचते हैं कि हम क्या कर पाँएगें जो हम उस क्षण तक नहीं कर पाए हैं?

एक अविनाशी देह का अर्थ है कि न तो वह बूढ़ी होगी और न ही बीमार होगी। हमारी नई देह हमेशा महिमामय रहेंगी। आपके पास हमेशा जवानी का बल रहेगा और परमेश्वर की महिमा का तेज जो आपसे निकलेगा उस कारण से आप तेजस्वी रूप से सुन्दर दिखाई देंगे। मैं विश्वास करता हूँ कि जैसे यीशु ने बन्द कमरे में प्रवेश किया जहाँ यहूदियों के डर के मारे द्वार बन्द थे (यहुन्ना २०:१९) हम भी भौतिक क्षेत्र से न बन्धे होकर क्षण–भर में यहाँ–वहाँ आ–जा सकेंगे। हमारी नई देह अस्तित्व के एक ही क्षेत्र में सीमित नहीं रहेगी। हम इसे अभी नहीं समझ सकते क्योंकि इस पृथ्वी पर इस आयाम को लेकर इस जीवन में हम सीमित हैं। जैसे एक विशाल, फैले हुए (ओक) बलूत के पेड़ की तुलना उस बीज से नहीं की जा सकती जिससे वह बढ़ता है, हमारी आत्मिक देह ऐसी हो जाएगी जिसकी हम कलपना भी नहीं कर सकते हैं। हम इसकी तुलना किसी और चीज़ से नहीं कर सकते।

पौलूस कहता है कि हमारी नई देह मसीह की महिमामय देह के जैसी होगी। (फि ३:२१) यह जो तेज हमारे साथ–साथ होगा। यीशु ने कहा कि धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। (मत्ती १३:४३) जो मसीह के हैं वे आदर पाँएगें लेकिन यह वह आदर होगा जो स्वर्ग से दी गई बुद्धि से आता है। वहाँ दयालुता और आनन्द है जो हमारा होगा। यह एक सामर्थी देह होगी। (१ को० १५:४३) मैं यह नहीं समझता कि यह केवल सामर्थ की बात कर रहा है जबकि निशिचत रूप से यह इसका भाग होगा। मैं समझता हूँ कि जैसा यीशु ने किया और अब भी करता है वहाँ सामर्थ और अधिकार होगा आश्चर्यकर्म करने के लिए। हम उसके भागीदार बनेंगे न केवल उसकी आराधना करने के लिए बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने के लिए। हमारी देह जिलाई जाएँगी और हम उसका चेहरा देखेंगे और उसके स्वरूप में बदल जाएँगें। दानिय्येल भविष्यद्वक्ता भी उस दिन का वर्णन इस प्रकार से करते हैं :

1 उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से ले कर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। 2 और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक

[2] Key Word Study Bible, AMG Publishers, Page 1651.

अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये। 3 तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे। (दानिय्येल १२:१–३)

दानिय्येल कहता है कि जैसे पहले कभी नहीं हुआ ऐसे संकट के समय में यह होगा। परन्तु उस समय हर वह जन जिसका नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है बचाया जाएगा। मैं यह मानता हूँ कि दानिय्येल संकट के समय में संतों के उठा लिए जाने (रेपचर) की बात कर रहा है। दूसरे सेशन "अनन्तकाल के लिए तैयारी" में हमने कहा था कि जो चीज़ हम अपने साथ स्वर्ग ले जा सकते हैं वे और लोग है। यहाँ इस भाग में हमें यह बताया गया है कि जो अपना जीवन औरों को मसीह के पास लाने में लगाते हैं वे उन तारों के समान होंगे जो सदा काल के लिए चमकते रहेंगे। मैं नहीं समझ सकता कि तारे के समान चमकना क्या होगा परन्तु निश्चित तौर पर यह ऐसा ईनाम प्रतीत होता है जो कि अनोखा/अद्भुत मेरी लगन के अनुसार और इस लायक होगा कि मैं इस जीवन में मसीह के प्रति समर्पित हो जाऊँ। जो कुछ परमेश्वर तुम्हारे भीतर और तुम्हारे द्वारा करता रहा है प्रगट होगा और यह महिमामय होगा। हमारे प्रभु के समान इस पुरानी सड़ती देह का कीड़ा अमर देह को पहन लेगा। यह घर जाने का समय होगा। आखिरकार डिग्री प्राप्त करने का दिन। अब इस जीवन की कोई भी बात हमें पीछे थामे नहीं रहेगी। जो अन्त हम एक शरीर की मृत्यु पर देखते हैं उससे कहीं दूर एक महिमामय नई शुरुआत होगी जो उसी की महिमामय पुनर्जीवित देह के जैसे एक दिन अपने आपको एक देह में प्रकट करेगी क्योंकि वह पहला फल है और हम उसके समान होंगे।

प्रार्थना: प्रभु तेरा धन्यवाद हमारे लिए स्थान तैयार करने के लिए। तेरे साथ स्वर्ग में होने के लिए जो मुफ़्त टिकट का सन्देश तूने दिया है उसके लिए तेरा धन्यवाद। होने दे कि वे सब जो इन शब्दों को सुनते और पढ़ते हैं, इसको बाद के लिए न टालें बल्कि पापों के लिए पूर्ण क्षमा का जो वरदान तूने दिया है उसके लिए अपना प्रत्युत्तर दें। होने दे कि तेरा प्रकाश हम में हमेशा और अधिक चमकने पाए। **आमीन**॥